प्राप्त हो जाता है। सोलहवें अध्याय में सिद्धान्त किया गया है कि जो शास्त्र-विधि का पालन नहीं करता, वह असुर है और जो श्रद्धापूर्वक शास्त्र-विधि को मानता है, वह देवता है। अब प्रश्न बनता है कि जो पुरुष श्रद्धापूर्वक कुछ ऐसे नियमों का पालन करता है, जो शास्त्रीय नहीं हैं, उसकी स्थिति कौन सी है? श्रीकृष्ण को अर्जुन के इस सन्देह को दूर करना है। जो व्यक्ति किसी एक मनुष्य को ईश्वर मानकर श्रद्धा के साथ उसी की पूजा करते हैं, उनकी स्थिति सात्त्विकी है, राजसी है, अथवा तामसी? क्या ऐसे व्यक्तियों को जीवन की संसिद्ध अवस्था प्राप्त होती है? क्या उनके लिए यह संभव है कि यथार्थ ज्ञान में स्थित होकर परम संसिद्धि को प्राप्त हो जायें? जो मनुष्य शास्त्र-विधि को नहीं मानते; परन्तु श्रद्धासहित कल्पित ईश्वरों, देवताओं अथवा मनुष्यों को पूजते हैं, क्या वे अपने प्रयास में सफल होते हैं? श्रीकृष्ण से अर्जुन के ये सब प्रश्न हैं।

श्रीभगवानुवाच।
त्रिविधा भवति श्रद्धा देहिनां सा स्वभावजा।
सात्त्विकी राजसी चैव तामसी चेति तां शृणु।।२।।

श्रीभगवान् उवाच=श्रीभगवान् ने कहा; **त्रिविधा**=तीन प्रकार की; **भवति**=होती है; **श्रद्धा**=श्रद्धा; **देहिनाम्**=जीवों की; **सा**=वह; **स्वभावजा**=प्राणी के प्राकृतिक गुण के अनुसार उत्पन्न हुई; **सात्त्विकी**=सात्त्विकी; **राजसी**=राजसी; **च**=और; **एव**=निःसन्देह; **तामसी**=तामसी; **च**=तथा; **इति**=इस प्रकार; **ताम्**=उसे; **शृणु**=सुन।

अनुवाद

श्रीभगवान् ने कहा, हे अर्जुन! बद्धजीव की श्रद्धा उसके गुणों के अनुसार सात्त्विकी, राजसी और तामसी, ऐसे तीन प्रकार की होती है; उसके तत्त्व को सुन।।२।।

तात्पर्य

"जो मनुष्य शास्त्रीय विधि-विधानों को जानते हुए भी आलस्यवश अथवा क्लेश समझ कर इन्हें त्याग देते हैं, वे प्रकृति के गुणों के आधीन हैं। पूर्वजन्म के कर्मों के गुणों के अनुसार ऐसे प्राणी को एक विशेष स्वभाव की प्राप्ति होती है। गुणों के साथ जीव का संग उसी अनादि काल से चला आ रहा है, जब वह माया के संसर्ग में आया। प्रकृति के जिस-जिस गुण से उसका संग होता है, वह उसके संस्कार को ग्रहण कर लेता है। परन्तु योग्य गुरु का सत्संग तथा उनका और शास्त्रों का आज्ञापालन करने से इस स्वभाव को बदला जा सकता है। शनैः-शनैः तमोगुण में अथवा रजोगुण से सत्त्वगुण में स्थित हुआ जा सकता है। सारांश यह है कि प्रकृति के किसी गुण में अंधविश्वास सिद्ध अवस्था की प्राप्ति में सहायक नहीं हो सकता। इसके लिए योग्य गुरु के आश्रय में सावधानी और विवेकसहित तत्त्व-विचार करना आवश्यक है। इस प्रकार जीव उच्चतर गुण में स्थित हो सकता है।